श्री कृष्ण प्रणामी धर्म पत्रिका

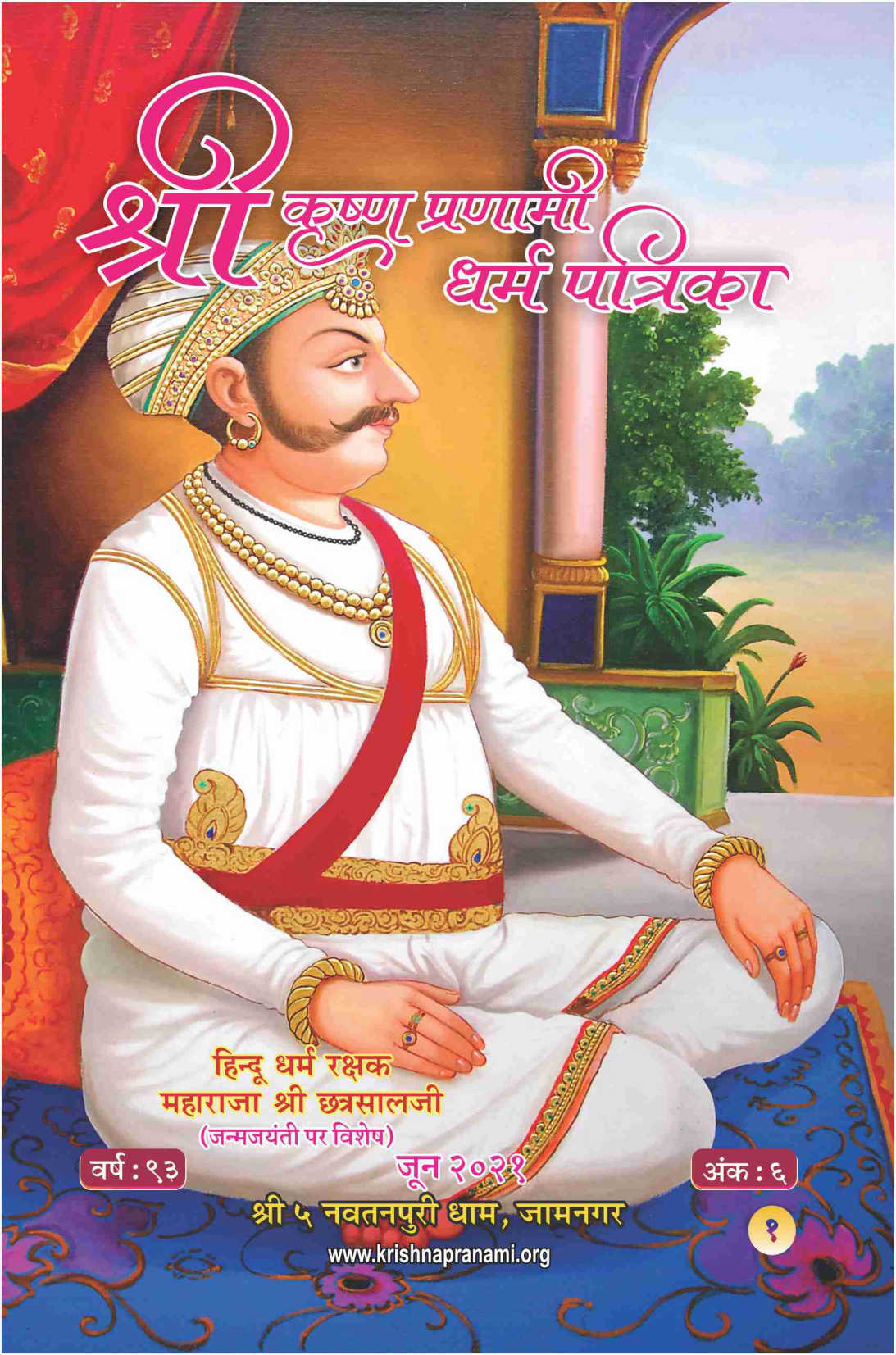

हिन्दू धर्म रक्षक
महाराजा श्री छत्रसालजी
(जन्मजयंती पर विशेष)

वर्ष : ९३ | जून २०२१ | अंक : ६

श्री ५ नवतनपुरी धाम, जामनगर

www.krishnapranami.org

RNI NO. GUJBIL/2006/18311, Postal Reg.No.Jam/GJN-1/2020-21
Validity : Upto 31-12-2023, Date of Publication : 10th of Every Month, Date of Posting : 16th of Every Month
Subscription : Annual Rs.150/-, 15 Years Rs.1500/-, No. of Pages : 36

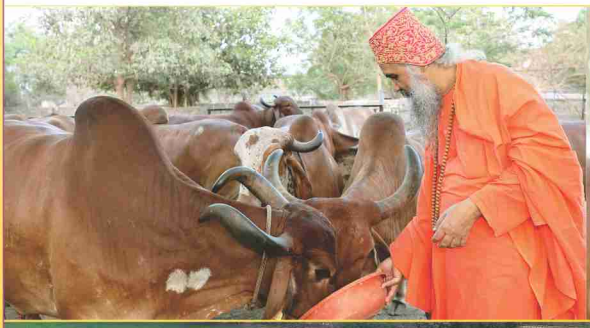

श्री ५ नवतनपुरी धाम संचालित श्री कृष्ण प्रणामी गौशाला, गौसेवा, गोसंवर्धन ।

श्री ५ नवतनपुरी धाममें सौर्य ऊर्जा उत्पादन ।

श्रीकृष्ण प्रणामी धर्म पत्रिका

संस्थापक : ब्रह्मलीन आचार्य श्री १०८ धनीदासजी महाराज

वि . सं : २०७८ निजानन्दाब्द : ४३८ बुद्धजी शाका : ३४३

वर्ष : ९३ जून २०२१ अंक : ०६

मुद्रक, प्रकाशक एवं स्वामित्व } जगद्गुरु आचार्य श्री १०८ कृष्णमणिजी महाराज

मुद्रण एवं प्रकाशन स्थल } श्री ५ नवतनपुरी धाम खीजड़ा मन्दिर जामनगर - ३६१ ००१ (गुजरात) भारत

सम्पादक : स्वामी श्री लक्ष्मणदेवजी महाराज

श्री कनकराय व्यास

पता : श्री कृष्ण प्रणामी धर्म पत्रिका, श्री ५ नवतनपुरी धाम, जामनगर 361 001

फोन : (0288) 267 2829 मो : 08511226600

E-mail : patrika@krishnapranami.org / navtanpuri@gmail.com

Website : www.krishnapranami.org / patrika

व्रत - उत्सव

दिनांक १२/०७/२०२१	रथ यात्रा
दिनांक २४/०७/२०२१	गुरु पूर्णिमा
दिनांक २६/०७/२०२१	तीज उपवास
दिनांक २७/०७/२०२१	चौथ उपवास
	श्री प्राणनाथजीकी धामगमन तिथि
दिनांक २८/०७/२०२१	श्री वीतक कथा प्रारम्भ
दिनांक २२/०८/२०२१	रक्षाबंधन, मिलाप एवं आचार्यश्री धर्मदासजी महाराजकी पुण्यतिथि ।
दिनांक ३०/०८/२०१९	श्री कृष्ण जन्माष्टमी ।
दिनांक ३१/०८/२०१९	नन्दमहोत्सव ।

श्री तारतम रसास्वाद

(महामति श्री प्राणनाथजी प्रणीत श्री तारतम सागरके किरन्तन ग्रन्थका यह ११८ वाँ प्रकरण है ।)

[मेड़ताके एक सुन्दरसाथ राजारामभाईने श्रीप्राणनाथजी तथा उनके साथके सुन्दरसाथकी सम्पूर्ण सेवाका दायित्व वहन किया था । स्वामीजीके पन्ना पहुँचने पर यह सेवा छत्रसालजीने माँगी । तब राजाराम भाईने छत्रसालजीको मधुर उपालम्भके साथ एक पत्र लिखा उसका भाव इस प्रकार था– 'यदि आप कहो तो हम भी उधर ही आ जाएँ, आपको सभीकी सेवाका पूर्ण लाभ मिलेगा ।' इस प्रसङ्गको इस प्रकरण द्वारा स्पष्ट किया है ।]

(राग –श्री)

मोमिन लिखे मोमिन को, कहो तो आवें इत ।
ए अचरज देखो मोमिनों, कैसा समया हुआ सखत ॥ १

एक ब्रह्मात्मा दूसरी ब्रह्मात्माको लिखती है कि यदि आप कहें, तो हम भी वहाँ आ जाएँ । हे ब्रह्मात्माओ ! आश्चर्यकी बात है कि कितना कठिन समय आ गया है ? सुज्ञ ब्रह्मात्माएँ भी सेवाके लिए परस्पर खींचातान करतीं हैं ।

दम दिल तन एकै, बिछुरके भूली वतन ।
जानूं के सोहोबत कबूं ना हुती, तो यों कहावे सुकन ॥ २

जिनके प्राण, हृदय और तन परमधाममें एक ही हैं, ऐसी ब्रह्मात्माएँ परमधामसे इस संसारमें आकर मूल घर सहित सब कुछ भूल गईं और पत्रमें ऐसे वचन लिखतीं हैं मानो उनकी पारस्परिक पहचान या मूल सम्बन्ध कभी भी नहीं था ।

मोमिन रखे मोमिनसों, जो तन मन अपना माल ।
सो अरवा नहीं अरस की, ना तिन सिर नूर जमाल ॥ ३

जो सुन्दरसाथमें ही परस्पर तन, मन, धनका अभिमान या भेद-भाव रखता है, वह परमधामकी आत्मा नहीं हो सकती, न ही उनके सिर पर परब्रह्म परमात्माकी छत्रछाया रहती है।

मता मोमिन का काफर, ले ना सके क्योंए कर ।
दिल मोमिनका अरस कह्या, दिल काफर इबलीस घर ॥ ४

वास्तवमें ब्रह्माङ्गनाओंकी सम्पत्ति (प्रेम, एकात्म भाव)को संसारके नास्तिक लोग कदापि स्वीकार नहीं सकते। ब्रह्माङ्गनाओंके हृदयको परमात्माका धाम कहा गया है। इन जीवोंके नास्तिक हृदय पर कलियुग(शैतान) सवार है।

जब मेला होसी मोमिनों, तब देखसी सब कोए ।
और ना कोई कर सके, जो मोमिनों से होए ॥ ५

जब ब्रह्मात्माओंका मेला होगा, तब सभी लोग उनकी शक्तिको समझ पाएँगे। वस्तुतः जो कार्य इन ब्रह्मात्माओंसे होगा, वैसा अन्य कोई नहीं कर सकेगा।

जब लग भूली वतन, तब लग नाहीं दोस ।
जब जागी हक इलमें, तब भूली सिर अफसोस ॥ ६

जब तक परमधामकी पहचान नहीं थी, तब तक हम निर्दोष थे, परन्तु सद्गुरु प्रदत्त दिव्य तारतम ज्ञानके द्वारा जागृत होने पर भी जो ब्रह्मात्माएँ भूल जाती हैं, उन्हें बड़ा पश्चात्ताप होगा।

हकें जगाए मोमिन, अपनी जान निसबत ।
अरस किया दिल मोमिन, बैठाए बीच खिलवत ॥ ७

परब्रह्म परमात्माने ब्रह्माङ्गनाओंको अपने मूल सम्बन्धी मानकर सद्गुरुके द्वारा जागृत किया। उनके हृदयको परमधाम बनाया तथा उन्हें मूलमिलावाकी बैठकमें बैठी हुई अनुभव करवाया।

जाकी तरफ न पाई किनहूं, इन माहें चौदे तबक ।
ताको ले बैठे दिल में, किया ऐसा अपने हक ॥ ८

जिस अखण्ड परमधामकी सुधि चौदह लोकोंके जीवोंको नहीं थी, ऐसे परमधामकी सभी सम्पदाओंके साथ धामधनीको ब्रह्माङ्गनाएँ अपने हृदयमें बैठा सकीं। वस्तुतः धामधनीने ही ब्रह्मात्माओंको ऐसी शक्ति प्रदान की है।

और दुनी के दिल पर, किया इबलीस पातसाह ।
सो गुम हुए बीच रात के, क्योंए न पावें राह ॥ ९

संसारके लोगोंके हृदय पर शैतनाका ही साम्राज्य फैला हुआ है। वे अज्ञानान्धकारमें भूले (फँसे) हुए हैं। उन्हें किसी भी भाँति सन्मार्ग नहीं मिलता।

ऐसा हकें जाहेर किया, ऊपर रूहों मेहेर मुतलक ।
कै विध बताई रसूलें, पर क्या करे हवाई खलक ॥ १०

इस प्रकार प्रियतम धनीने ब्रह्माङ्गनाओं पर असीम कृपा की है। इसका वर्णन रसूलने भी विभिन्न प्रकारसे किया है। परन्तु झूठी इच्छाओंमें फँसे हुए सांसारिक प्राणी इस विषयमें कैसे विचार कर सकते हैं ?

मोमिन सुकन सुन जागसी, जाको अरस वतन ।
जब नूर झंडा खडा हुआ, पीछे रेहे ना रूहें अरस तन ॥ ११

जिनके मूल तन परमधाममें हैं, ऐसी ब्रह्माङ्गनाएँ तो अपने मूल सम्बन्धके वचन सुनकर जागृत हो जाएँगी। जब दिव्य तारतमज्ञानका झण्डा आरोपित हो गया, तो परमधामकी मूल आत्माएँ तनिक भी पीछे नहीं रहेंगी।

एह किताबत पढ के, रूहें रेहे ना सके एक खिन ।
झूठीसों लग ना रहे, जो रूह होए मोमिन ॥ १२

अखण्ड परमधामके पूर्णज्ञानसे सम्पन्न ग्रन्थोंके समूह श्री तारतम सागरको पढ़कर कोई भी ब्रह्माङ्गना एक क्षणके लिए भी इस झूठे संसारमें नहीं टिक सकेगी, क्योंकि जिसकी आत्मा मूल परमधामकी है, वह इस झूठे संसारकी मायामें लिपटी नहीं रहेगी।

सखत वेखत ऐसा हुआ, ईमान छोड्या सबन ।
तब अरवाहे करे कुरबानियां, मह होवे मोमिन ॥ १३

ऐसा कठिन समय आ पहुँचा है कि सबलोगोंका विश्वास टूट गया। ऐसे समय सच्ची ब्रह्माङ्गनाएँ धामधनीके चरण कमलोंमें स्वयंको समर्पित कर एकरस हो जाएँगी।

जीव देते ना सकुंचे, मोमिन राह हक पर ।
दुनियां जीव ना दे सके, अरस रूहों बिगर ॥ १४

ब्रह्माङ्गनाएँ परमधामके मार्ग पर चलनेके लिए अपने प्राणोंको न्योछावर करनेमें लेशमात्र भी सङ्कोच नहीं करेंगी। परमधामकी आत्माओंके अतिरिक्त अन्य कोई भी इस प्रकार समर्पित नहीं हो सकेंगे।

अरस तन रूह मोमिन, लोभ न झूठा ताए ।
मोमिन जुदागी ना सहे, ज्यों दूध मिसरी मिल जाए ॥ १५

सुन्दरसाथके तनमें परमधामकी आत्मा है, इसलिए उन्हें इस झूठे संसारका लोभ नहीं है। ऐसी ब्रह्माङ्गनाएँ अपने प्रियतमसे पृथक् नहीं रह सकतीं। वे तो दूध और मिश्रीकी भाँति धामधनीके साथ घुल मिल कर रहती हैं।

लिखी फकीरी ताले मिने, अपने हादी के ।
कदम पर कदम धरें, मोमिन कहिए ए ॥ १६

इन आत्माओंके भाग्यमें धनीजी द्वारा फकीरी (त्याग भावना) लिख दी गई है, इसलिए वे सद्गुरुके पद-चिह्नोंका अनुसरण करते हुए उनके इङ्गित मार्ग पर चलेंगी। सच्ची ब्रह्मात्माओंका यही परिचय है।

एक हक बिना कछू ना रखे, दुनी करी मुरदार ।
अरस किया दिल मोमिन, पोहोंचे नूर के पार ॥ १७

ऐसी ब्रह्माङ्गनाएँ अपने दिलमें धामधनीके अतिरिक्त कुछ भी नहीं रखतीं। उन्होंने नश्वर संसारको मृतक तुल्य (तुच्छ) माना है। इसलिए

धनीजीने ऐसी ब्रह्माङ्गनाओंके हृदयको परमधाम बना दिया । वे ही अक्षरके परे परमधाममें पहुँच सकीं हैं ।

महामत कहे ए मोमिनो, ए है अपनी गत ।
झूठ वास्ते जुदे ना पडे, मोमिन अरस वाहेदत ॥ १८

महामति कहते हैं, हे सुन्दरसाथजी ! हम ब्रह्माङ्गनाओंके रहन-सहन और चाल चलनका यही वृत्तान्त है । परमधाममें एक हृदय होकर रहने वाली ब्रह्मात्माएँ संसारकी झूठी मान मर्यादाके लिए एक दूसरेसे पृथक् नहीं होंगी ।

इन महंमद के दीन में, जो ल्यावेगा ईमान ।
छत्रसाल तिन ऊपर, तन मन धन कुरबान ॥ १९

श्रीप्राणनाथजी (अन्तिम मुहम्मद) द्वारा उपदेशित सत्य मार्ग पर विश्वास कर जो इसे ग्रहण करेंगे, छत्रसाल उन पर तन, मन तथा धन न्योछावर कर देंगे ।

श्रद्धा एवं विश्वास

एक ९० वर्षीय वृद्ध किसी प्रसिद्ध संगीतकारके साथ शास्त्रीय संगीत-सा-रे-ग-म-प-ध-नी सिखने लगा । सामनेसे किसी सज्जनने वृद्धको प्रश्न किया । अरे ! दादा यह क्या कर रहे हैं । आपकी यह उमर कोई शास्त्रीय संगीत सिखनेकी है ? अब सिखकर करेंगे क्या ? बेटे ! मैं अभी अपनी इच्छाशक्तिको तीव्र करनेकी चेष्टा कर रहा हूँ । संगीत प्रति लगाव पैदा कर रहा हूँ । इसी इच्छा एवं लगावको लेकर मेरी मृत्यु हो ताकी अगले जन्ममें मेरी बाल्यावस्थासे ही संगीतमें रुचि जागृत हो और मैं एक महान संगीतकार बनूं । धन्य है ऐसी समृद्ध संस्कृति और धन्य हैं वे सभी जो ऐसी संस्कृतिको श्रद्धा एवं विश्वासपूर्ण जीवनमें धारण करते हैं ।

उपरोक्त दृष्टान्तमें जो श्रद्धा और विश्वासकी बात है उसी श्रद्धा और विश्वासके साथ पूर्णब्रह्म परमात्मा श्री राजजीकी भक्ति करेंगे तो उनके चरणोंमें अवश्य जागृत होंगे । अवश्यमेव हमारा भी कल्याण होगा ।

सेवा धर्म

अनन्तश्री विभूषित जगद्गुरु आचार्य श्री कृष्णमणिजी महाराज

ना कछु सुध सेवा समान, जो दिल सनकूल करे पहेचान ।

सेवा सबसे महत्त्वपूर्ण भावात्मक कार्य है । जिसकी सेवा की जाती है, उसके अनुकूल अपने चित्तवृत्तिको बनाकर विवेकके साथमें की गई सेवा सर्वोपरि मानी जाती है । उसके समान संसारमें कोई सेवा नहीं है । अक्षरातीत परमात्मा श्री राजजी तथा अपने गुरुजनोंके प्रति श्रद्धा, विश्वास एवं भक्ति हो तो सभी कार्य सेवाका रूप धारण कर लेते हैं । साथ ही उसके द्वारा जो आनन्द प्राप्त होता है उसका वर्णन करना असंभव है । इसीलिये श्री प्राणनाथजी कहते हैं, **चले चित्त पर होय आधीन ।** स्वयंको स्वच्छन्द न समझकर परब्रह्म परमात्माको प्रसन्न करनेके लिये प्रत्येक कार्य उनके अनुरूप तथा उनके प्रति समर्पित भावसे, अन्य कोई कामना किये बिना करें तो वह सेवा वास्तवमें यथार्थ अथवा सफल मानी जाएगी है ।

सेवा और भक्ति समान अर्थमें हैं । सामान्य अर्थमें परब्रह्म परमात्मा तथा गुरुजनोंके प्रति व्यक्त की गई श्रद्धा भक्ति कहलाती है । श्रद्धा एवं विश्वास पूर्वक किया गया कार्य सेवा कहलाता है । भक्ति भावात्मक होनेके कारण उसके दर्शन शीघ्र नहीं होते हैं और सेवा क्रियात्मक होनेके कारण प्रत्यक्ष दिखाई देती है ।

सेवाका ढंग, उद्देश्य, मानसिक तल्लीनताके आधारपर सेवकका भाव निश्चित होता है । अतः शास्त्र और महापुरुषोंका कहना है कि सेवा अत्यन्त कष्टसाध्य है । केवल दिखावा मात्रको सेवा नहीं कहा जा सकता । सेवामें तो भावना होनी चाहिए । शास्त्रकार तो यहाँ तक कहते हैं कि वर्षों पर्यन्त साधना करने वाले योगियोंके लिये भी सेवाधर्म दुष्कर और गहन है,

सेवा धर्मो परमगहनो योगिनामप्यगम्यः ।

प्राचीन समयमें बहुतसे व्यक्तियोंने अपने गुरुजनोंकी, गरीब-दु:खियोंकी सेवा कर अपनी भावनानुसार फल प्राप्त किए हैं । नारदजीने ऋषियोंकी सेवा की तो दासी पुत्रसे देवर्षि बन गये और ब्रह्माजीने उनको अपने मानस पुत्र(शिष्य)के रूपमें स्वीकारा। हनुमानजीने भी भगवान श्री रामजीकी आजीवन सेवा की, श्रवणकुमारने मातापिताकी सेवा की, युधिष्ठिरने प्रजाकी सेवा की, भक्त पुंडरिकने माता पिताकी सेवा की, भगवानने उनको दर्शन भी दिए । सेवाकी परम्परा प्राचीन कालसे ही चली आ रही है । इस संदर्भमें श्रीप्राणनाथजीका कहना कुछ विशेष महत्त्व रखता है । वे कहते हैं, सेवामें हृदयको अनुकूल बनानेके उपरांत परखकी भी आवश्यकता होती है। जिनकी सेवा की जा रही है उनको उसी रूपमें पहचानना अत्यन्त आवश्यक है ।

तात्पर्य यह है कि माता पिताकी सेवा करें तो उसको अपना कर्तव्य समझें। कर्तव्यसे विमुख होना अपनी प्रगतिको अवरूद्ध करना है। इसी प्रकार गुरुकी सेवा भी अपना कर्तव्य है । माता पिताके द्वारा पालन-पोषण मिलता है तो गुरुद्वारा जीवनकी नयी दिशा प्राप्त होती है। इसलिए माता पिता एवं गुरु प्रतिका कर्तव्य भावपूर्ण होना चाहिये । मनुष्य सामाजिक प्राणी होनेसे जिस परिवार तथा समाजमें उसका जन्म हुआ है उनके प्रति भी उसका कुछ कर्तव्य होता है। कर्तव्यमें जागरूकता यह महापुरुषोंका लक्षण है, किन्तु कर्तव्य पालन समझपूर्वक होना चाहिये । जिससे कर्तव्यमें सन्तुलन बना रहे ।

मनुष्य जीवन प्राप्त करने पर सर्व प्रथम उसका यह कर्तव्य बनता है कि वह अपनी आत्माको पहचाने और परब्रह्म परमात्माके साथके सम्बन्धको भी पहचाने । यह पहचान आभ्यान्तरिक चेतना जागृत होने पर ही सम्भव है । इसलिये श्री प्राणनाथजी आत्मजागृतिको अधिक महत्त्व देते हैं। आत्म जागृतिके अनन्तर ही कर्तव्याकर्तव्यकी परख होगी । जागृतिके पश्चात्का प्रत्येक कार्य शुभ गतिवाला होगा । प्रत्येक प्रभात नया होगा । प्रतिक्षण प्रेममें अभिवृद्धि होगी । अहं और मम जैसी क्षुद्र भावनायें दूर होंगी । जीवनमें विशालता एवं नवीन प्रकाशका आविर्भाव होगा ।

श्री प्राणनाथजीने तारतम ज्ञानके द्वारा सुन्दरसाथकी चेतनाको जगाकर परमधामके साथके मूल संबन्धकी पहचान करवायी । उस समय हजारों सुन्दरसाथ उनके प्रति समर्पित थे। जागृत होनेके पश्चात् उन लोगोंने अपना जीवन अन्यको जगानेमें समर्पित किया। उनको लोभ तथा इच्छा छू नहीं सकती थी। ऐसे महानुभावोंमें कानजीभाई अन्यतम थे। उनको हुआ कि मेरी देह समर्पित करनेसे अधिक सुन्दरसाथ जागृत होंगे तो यह मेरा सौभाग्य है। ऐसा सोचकर वे जूनागढसे अमदाबाद पहुंचे और कारागृहमें जाकर श्री प्राणनाथजीको मुक्त किया। वास्तवमें इससे महत्त्वपूर्ण सेवा कोई नहीं है। जिसको अपनी चिन्ताकी अपेक्षा दूसरोंकी चिन्ता है, वह भी आत्म-जागृतिके लिये एक सीढी है। उनके जैसा महान कोई विरला ही होगा। दधीचि ऋषिने देवताओंके विजयके लिये अपना शरीर समर्पित किया। राजा रन्तिदेवने अन्योंके लिये अपने प्राणोंकी बाजी लगाई। परन्तु कानजीभाईका समर्पण अन्योंकी आत्मा परमधाममें जागृत करनेके लिये है। अतः यह सर्वोपरि समर्पण है।

इसी परम्परामें हम सभी सुन्दरसाथ भी हैं। किन्तु अन्तर इतना ही है कि हम सब पहले अपनी सुविधा देखते हैं तत्पश्चात्त् दूसरोंकी ओर देखते हैं। जब कि कानजी भाईने सुन्दरसाथके लिए स्वयंको समर्पित किया। कहनेको तो हम सुन्दरसाथ धामके सम्बन्धी हैं। वह भी ऐसा धाम जहाँ प्रेम ही प्रेम है। परन्तु क्या हम ऐसे धामके वासी हैं इतना कहने मात्रसे हमारा कार्य पूरा होगा ? नितान्त नहीं ! हमारा आचरण (रहनी) भी उसीके अनुरूप होना चाहिए। तभी हम सुन्दरसाथ कहलायेंगे। अभी तो हम मन्दिरमें मस्तक नमाना भी भूलने लग गए हैं। अपना लाभ देखकर ही हम श्रीराजजीको भी प्रणाम करते हैं।

सुन्दरसाथजी ! यह अपना सुन्दरसाथपन सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी तथा महामति श्रीप्राणनाथजीके अनुसार नहीं है। जिसके लिये उन्होंने कष्टोंकी परवाह नहीं की, उनके महत्त्वको हम समझ नहीं सके। श्री प्राणनाथजीने वाणीमें स्पष्ट कहा है, **दूध तो देख्या नहीं, देख्या ऊपरका फेन ।** श्री प्राणनाथजीके अनुसार चलें तो सम्पूर्ण विश्वको शान्तिका अनुभव हो सकता

है । परन्तु श्री प्राणनाथजीके अनुयायियोंको ही अशान्तिका अनुभव हो तो इसमें दोष किसका है ? जागृत व्यक्ति अपने आप ही कर्तव्य पालन करता है। केवल मन्दिरमें जानेसे ही अपना कर्तव्य पूर्ण नहीं होता है । श्री राजजीको प्रणाम किया तो इससे सब कुछ हो गया है ऐसी बात नहीं है । वाणीकी कुछ चौपाइयोंको पढ़ने मात्रसे सबकुछ नहीं होता है अपितु उनका अर्थ भी समझनेकी आवश्यकता है कि श्रीप्राणनाथजी क्या कहना चाहते हैं ? मन्दिरमें जाकर प्रणाम करते समय हमारा ध्यान श्री राजजीके चरणोंमें होता है ? यह भी विचार करें कि मैंने सुन्दरसाथकी क्या सेवा की है ? हम प्रभाती गाते हैं,

मैं वर मांगू श्री धामधनीजीसों, मैं वर मांगूं धाम ।
सेवा साथ शरण सद्गुरुको, सुमिरनको निजनाम ॥

यह भी विचार करें कि हम इसका अर्थ समझ कर इसे अपने व्यवहारमें उतारते हैं ? हम कंठी बाँध कर सुन्दरसाथमें सम्मिलित तो हो गए हैं किन्तु यह भी समझ लें कि मात्र सुन्दरसाथ कहलाना इतना महत्त्वपूर्ण नहीं है। सबसे महत्त्वपूर्ण बात तो यह है कि हम सुन्दरसाथका भाव समझकर तदनुसार अपना जीवन व्यतीत करना सीखें ।

सेवा तन, मन, धन तीनों प्रकारसे होती है। इनमें भी भावनापूर्वक की गयी सेवाको विशिष्ट सेवा कहा गया है । वास्तवमें सेवा उसको कहा जाता है जिसमें समर्पणकी भावना हो । हम जिसकी सेवा कर रहे हैं, हमारी सेवा उसकी प्रसन्नताके लिये हो न कि अपनी प्रतिष्ठाके लिये । सेवा तन, मन एवं धन किसी भी प्रकारसे हो सकती है किन्तु इनमें तन सेवाको प्रथम श्रेणीमें रखा गया है । क्योंकि धन एवं मन दोनों होनेसे भी तनके बिना सेवा नहीं हो पाती है । आज लोगोंके पास सम्पत्ति तो है परन्तु उनका शरीर सेवाके लिए सक्षम नहीं है। इसलिए वे समय निकाल कर शारीरिक सेवा नहीं कर सकते हैं। मनको मध्यमें इसलिए रखा गया है कि मनके बिना तन भी काम नहीं कर सकता है और धनकी भी सेवा नहीं हो सकती है। जिसने तनके साथ मनको जोड़कर सेवा की उसकी वह सेवा बहुत ही बड़ी कहलायेगी । कितने लोग

शरीरसे अस्वस्थ रहते हैं और सम्पत्तिसे भी कमजोर होते हैं । किन्तु ऐसे लोगोंके पास यदि स्वस्थ मन है और उनकी भावना अच्छी है तो वे मनसे भी बहुत बड़ा काम कर सकते हैं । किसी कार्यके प्रति सद्भावना रखना भी बहुत बड़ी बात होती है । ऐसे लोग कार्य सफलताके लिये घरमें बैठे बैठे भी भजन, पाठ, स्तुति, प्रार्थना आदि मानसिक सेवाके द्वारा अपना योगदान प्रदान कर सकते हैं । इसके लिए मनका स्थिर होना अति आवश्यक है । ध्यान रखें कि शुद्ध मन ही स्थिर रह सकता है । इसलिए मनको शुद्ध बनायें ।

वर्तमान परिप्रेक्षमें धनका भी उतना ही महत्त्व है । आज सम्पत्तिके बिना कुछ नहीं हो सकता है । कितने लोग ऐसे होते हैं जो शरीरसे अस्वस्थ रहनेसे शारीरिक सेवा करनेमें सक्षम नहीं होते हैं । परन्तु उनके पास भावना एवं सम्पत्ति दोनों ही होगी तो वे सद्कार्यके लिये अपनी सम्पत्तिका सदुपयोग भावपूर्वक कर सकते हैं । वैसे तो मनके बिना धनका भी सदुपयोग नहीं हो सकता है । धन एवं मन दोनों हों तो दूसरोंसे भी अच्छे कार्य करवा सकते हैं, किन्तु मन ही न हो तो धनका भी उपयोग नहीं हो सकता है । अतः तनकी सेवाकी भांति सम्पत्तिके सदुपयोगमें भी मनका होना आवश्यक है । जिसके पास तन भी स्वस्थ हो, मन भी शुद्ध हो और सद्कार्यमें रुचि भी हो और वह सम्पत्तिसे भी सम्पन्न हो तो उसके द्वारा की गई तन, मन एवं धनकी सेवा अमूल्य मानी जायेगी ।.....卐

श्री कृष्ण प्रणामी धर्मके मूल स्तम्भ

महन्त श्री अमृतराज महाराज, नवतन धाम (काठमाडौं)

निजानन्दस्वामी श्री देवचन्द्रजी महाराज :

श्रीमन्निजानन्द सम्प्रदायके आदि आचार्य विश्ववंद्य निजानन्दाचार्य सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी महाराजका प्राकट्य परम धर्मनिष्ठ माता-पिता मतु मेहता और कुंवर बाईके यहां मारवाड़ देश उमरकोट गांवमें वि.सं. १६३८ (सन् १५८१) आश्विन शुक्ला चतुर्दशीके दिन हुआ था। आप साक्षात् परब्रह्म परमात्मा अक्षरातीत श्री कृष्णकी आल्हादिनी शक्ति श्यामा महारानीकी अंग स्वरूपा श्री सुन्दरबाईकी पावन आत्मा थे। इसलिए तो जगतमें आकर भी आप अपने स्वामीसे मिलनकी उत्कृष्ट अभीप्सासे अभीप्रेरित थे। अपनी शैशवावस्थासे ही आपके मनमें मैं कौन हूँ ? यह जगत क्या है ? की भावनाएं उत्पन्न होने लगी। स्वामी श्री लालदासजीके शब्दोमें,

जब वय वरष अग्यारमा, तब मन उपज्यो विचार ।
मैं कौन कहाँ थे आइया, कहाँ है मेरो भरतार ॥

यही तो महानात्माओंकी विलक्षणता है। आप सृष्टिनियंता परब्रह्म परमात्माकी खोजमें निकल पड़े, जबकि आपकी अवस्था ११ वर्ष की ही थी। अनेक पंथ-पैड़े, मत-मतान्तर, सम्प्रदाय, आदिको आपने निकटसे देखा, फिर भी आपके मनको कहीं भी परमतत्वकी झलक दिखाई न दी। शान्ति और आनन्दको प्राप्त न कर सके। अन्तमें खोज करते-करते आप भूज-कच्छ पहुंचे, जहां गोस्वामी हरिदासजी रहते थे। उनसे आपकी भेंट हुई। उनके सतसंगसे आपके मानस पर सन्तोषकी आभा मिली।

अपनी एक मात्र सन्तानकी खोज करते-करते आपके माता-पिता भी वहां पहुंचे। सांसारिक जीवनके प्रति अभिरुचि जाग्रत करनेके लिए उन्होंने लीलाबाईके साथ आपका संबन्ध जोड़ दिया। लेकिन आपका दिव्य जीवन

तो भौतिक सुख-वैभवादिसे सदा मुक्त था । सांसारिक संबन्धोंकी जंजीरें आपको संसारके बन्धनमें जकड़ न सकी ।

२५ वर्षकी अवस्थामें आप अपने माता-पिता सहित जामनगरमें आकर रहने लगे । जामनगर एक अध्यात्म विद्याका केन्द्र था, इसलिए तो इसको छोटी काशी कहते हैं । वहां श्री श्यामजीके मंदिरमें सुप्रसिद्ध कथाकार कान्हजी भट्ट श्रीमद्भागवतकी कथाका पान, ज्ञान पिपासुओंको हमेशा कराया करते थे । आत्मानुभूतिकी उत्कट अभीप्साने आपको चौदह वर्ष पर्यन्त एकनिष्ठ एवं पुष्ट भावसे नित्य श्रवण करनेकी सत्प्रेरणा दी । आपको स्वयं परब्रह्म परमात्मा श्री कृष्णजीने साक्षात् दर्शन देकर बीज मंत्र श्री **तारतम महामंत्र** दिया । आपकी चेतना जाग उठी । अन्तर्दृष्टि खुली और आप साक्षात् दिव्य अखण्ड परमधामके प्रत्यक्ष दर्शन करने लगे ।

आपने इस तारतम मंत्रकी अलौकिक शक्तिसे जागनीका शंखनाद किया । चारों ओरसे ब्रह्मात्माएं उसकी ओजस्वी ध्वनि सुनकर दौड़ पड़ी ।

आपको परब्रह्म परमात्मा अक्षरातीत श्री कृष्णने दर्शन देकर पातालसे परमधाम पर्यन्तके दर्शन करवायें, ज्ञान दिया एवं तारतम महामंत्र प्रदान किया । ऐसे परब्रह्म परमात्मा श्री कृष्णको प्रेम और भक्ति पूर्वक अनन्य भावसे सतत् नमन या प्रणाम करनेवाले कृष्ण प्रणामी कहलाते है । निजानन्द स्वामी श्री देवचन्द्रजी महाराजने पूर्णब्रह्मकी आज्ञासे **श्री कृष्ण प्रणामी धर्म व निजानन्द सम्प्रदाय**की स्थापना की और अपने करकमलों द्वारा धर्मपीठ श्री ५ नवतनपुरी धामकी स्थापना की । आप इस नश्वर जगतमें वि.सं. १७१२ (सन् १६५५) तक जागनी लीला करते रहे ।

विश्व धर्म प्रणेता महामति श्री प्राणनाथजी :

महामति श्री प्राणनाथजीका आविर्भाव वि. सं. १६७५ (सन् १६१८) आश्विन कृष्ण चतुर्दशीके दिन परम धर्मनिष्ठ माता-पिता श्री केशव ठाकुर और धन बाईके यहां जामनगरमें हुआ था । १२ वर्षकी अल्पायुमें ही आप

सद्‌गुरु श्री निजानन्दाचार्य श्री देवचन्द्रजीके दर्शनार्थ गए और आपको देखते ही सद्‌गुरु श्री देवचन्द्रजीने दिव्य परमधाममें विहार करने वाली इन्द्रावतीकी पावन आत्मा परख ली और सम्पूर्ण जागनी तथा धर्म प्रचारका दायित्व सौंप दिया।

आपके पिता जामनगर राज्यके दिवान थे। सांसारिक सुख सुविधा वैभव और समृद्धिसे पूर्ण होते हुए भी आप अपने सद्‌गुरुके अलौकिक दिव्य ज्ञानसे अनुप्राणित वैदिक सनातन धर्म व संस्कृतिका अवलोकन करनेके पश्चात् गुरुआज्ञा शिरोधार्य करके भौतिक वैभवादिको त्याग कर धर्म प्रचारार्थ निकल पड़े। आपने जागनी अभियानका उद्‌घोष करते हुए पांच देशोंकी यात्रा की। भारत, पाकिस्तान (ठठ्ठानगर, लाठी बंदर) इराक (बगदाद, बसरा बंदर) ईरान (अब्बासी और कोक बंदर) ओमान (मस्कत)। उस समय वैदिक सनातन हिन्दू धर्म और संस्कृतिको विदेशकी धरतीमें प्रचार-प्रसार करनेवाले भारतीय हिन्दू संतोंमें महामति श्री प्राणनाथजीका नाम प्रथम लिया जाता है। आपने विश्वके अनेक भागों और देश-देशान्तरमें पर्यटन करते हुए लाखोंकी संख्यामें आत्माओंको जाग्रत किया।

आप जामनगरसे जूनागढ़, दीवबन्दर, अहमदाबाद, कच्छ, ठट्ठा नगर, मसकत और अब्बासी बंदर, सूरत, आगरा, मथुरा होते हुए वि.सं. १७३५ में हरिद्वार पहुँचे। वहां वैशाख माहका महान कुम्भ पर्व था। इस पर महाप्रभुने सर्वधर्मावलम्बियोंसे धार्मिक चर्चा तथा विचार विमर्श किया और एकत्रित समस्त जन समूहको एकेश्वरवाद परब्रह्म परमात्माकी उपासना विश्व बन्धुत्वकी भावनासे अभिप्रेरित करके सर्वधर्म समन्वयात्मक आपसी एकता और भाईचारेकी सीख देकर सत्य धर्म जयकी दुंदुभी बजाई। महामतिने सभी धर्माचार्योंसे बड़े प्रेम एवं आग्रह पूर्वक उनकी सम्प्रदाय पद्धतिको सुना। सब लोग क्षर जगतकी भूमिकाओं एवं इष्ट देवोंकी उपासना करते थे। उन सबके बीच आपने जिस पद्धतिको प्रतिष्ठित किया उसका मूल क्षर-अक्षरसे पार अक्षरातीत धाममें है।

एकत्रित विज्ञजनों, संतो, महन्तों एवं धर्माचार्योंने आपको विजयाभिनन्द बुद्ध निष्कलंक अवतारके रूपमें स्वीकार किया । उसी दिनसे हमारे समाजमें बुद्धजीके शाकाका प्रचलन हुआ ।

तत्कालीन दिल्लीकी राज सत्ताकी बागडोर मुगल बादशाह औरंगजेबके हाथोमें थी । चारों ओर मुगलोंका वर्चस्व था । मुगल सत्ता हिन्दू प्रजा और हिन्दू धर्मके प्रति अन्याय, अत्याचार करती थी । इतना ही नहीं हिन्दुओंके मंदिर तोड़ना, हिन्दू अबलाओंकी इज्जत लूटना, व्यभिचार करना यह सब तो एक खेलवाड़ जैसा था । महाप्रभुने इसे रोकनेके लिए भगीरथ प्रयास किया । सत्याग्रह करके भी बादशाहको सत्य मार्ग पर लाना चाहा । इसी संदर्भमें देश-देशके राजा-महाराजाओंको झकझोरा । इस प्रकार सब राजाओं और जनताको जागृत करते हुए दिल्लीसे आमेर, उदयपुर, मंदसोर, उज्जैन, औरंगाबाद, अगरिया, विलहरी आदि होते हुए १७४० में पन्ना-बुन्देलखण्ड़(म.प्र.) पहुंचे । वहां नरवीर केशरी महाराजा छत्रसालने आपकी ओजस्वी वाणी सुनी । जिससे उनकी मुरझाई हुई आत्मा खिल उठी । मेघकी गर्जना सुनकर उनका मन मोरकी तरह नाच उठा । महाराजा छत्रसाल महामति श्री प्राणनाथजीका उद्घोष सुनकर हर्षित हुए । उनकी आत्मामें एक नये जागरणकी चेतना संचार हो गई । उन्होंने महाप्रभुका शिष्यत्व ग्रहण कर लिया ।

प्राणनाथजीने विश्वके सभी धार्मिक और सांस्कृतिक परम्पराओंका मंथन करके अपने निष्पक्ष विचारोंद्वारा धर्मको रूढियों और संकीर्णताओंसे बाहर निकाल कर एक ब्रह्मकी उपासनामें सभीको लगानेका आह्वान कर एक धर्मका स्वस्थ स्वरूप प्रदान किया, जिससे समग्र मानव जातिके लिए एक कल्याणकारी मार्ग प्रशस्त हो गया ।

ग्यारह वर्ष पर्यन्त पन्नामें रहकर पन्नाको परम पुनित धामके पदसे विभूषित कर वि.सं. १७५१ अपने इस पार्थिव शरीरको त्याग दिया । तबसे पन्ना श्री ५ पद्मावतीपुरी धामके नामसे प्रसिद्ध हैं ।

नरवीर केसरी महाराजा छत्रसाल :

महाराजा छत्रसालका जन्म वि. स. १७०६ जेष्ठ शुक्ल तृतीयाको हुआ था। उस समय मुगल शासन अत्याचारकी चरम सीमा पर पहुंच चुका था। बुन्देलखण्डके शासक वीर चम्पतराय अपनी रानी सहित जंगलमें मुगल सेनासे घिरे हुए थे, ऐसी विकट परिस्थितिमें छत्रसालका जन्म हुआ था। चम्पतराय रानी सहित नवजात शिशुको उठाकर मोर पहाड़ीसे कूद गये। छ वर्षकी आयुमें ही माता-पिताका निधन हो जानेसे छत्रसाल अनाथ हो गये।

छत्रसालका लालन-पालन उनके मामाके घर पर हुआ। उन्होंने ग्यारह वर्षकी छोटी अवस्थामें ही घुड़ सवारी, अस्त्र-शस्त्रादि संचालनमें निपुणता प्राप्त कर ली। बारह वर्षकी अल्पावस्थासे तो उन्होंने मुगलोंसे मुठभेड़ करना प्रारम्भ कर दिया। उनके बाल्यकालकी अनेक वीर गाथाएं प्रचलित हैं।

१८ सालकी उम्रमें छत्रपति शिवाजीसे मिलनेका दृढ निश्चय करके वे बुन्देलखण्डसे चल पड़े। सिंहगढ़में जाकर वे शिवाजीसे मिले। उनका देदीप्यमान तेजस्वी चेहराको देखकर शिवाजीने गले लगाया। शिवाजीके गुरु रामदासकी तस्वीर देखकर उनकी आत्मा भी पथ प्रदर्शक गुरुकी खोजमें छटपटाने लगी। शिवाजीसे युद्ध कौशल, राजनीति तथा राज्य व्यवस्थाकी आवश्यक सीख लेकर वे पन्ना लौट आए।

तत्कालीन औरंगजेबका शासन अधर्म और अनीतिका था। वह हिन्दू धर्म और हिन्दू प्रजाके प्रति घोर अन्याय और अत्याचार करता था। उसकी साम्प्रदायिक संकीर्णता, अधर्म नीति और आर्थिक शोषण प्रवृतिसे हिन्दू जनता पीड़ित थी। धर्मान्ध क्रूर औरंगजेबके इस कुकृत्यको रोकनेके लिए उन्होंने वि. सं. १७२८ ज्येष्ठ शुदी पंचमीके दिन स्वतन्त्रता संग्राम छेड़नेका दृढ संकल्प लेकर कमर बांधी।

पथ प्रदर्शक गुरुके मार्ग दर्शनार्थ आपकी पावन आत्माकी छटपटाहटके फल स्वरूप महाप्रभु स्वामी श्री प्राणनाथजीसे उनकी भेट हुई। उनकी

संतप्तात्माको देखकर महाप्रभुने उसमें चेतना भर दी । उन्होंने महाप्रभुका शिष्यत्व स्वीकार कर लिया । महाप्रभुने उनको आशीर्वाद दिया,

छत्ता तेरे राजमें, धक धक धरती होय ।
जित जित घोड़ा पग धरे, तित तित फत्ते होय ॥

इस आशीर्वादको प्राप्त कर महाराजा छत्रसालकी आत्मामें नई उमंग, नया जोश उभर आया । राजनैतिक, धार्मिक और युद्ध नीतिके पथ प्रदर्शक गुरुको पाकर महाराजा छत्रसालने मुगलोंसे साठ युद्ध किए और हमेशा विजयी हुए । फलतः आपने मुगल बादशाह औरंगजेबके शासन कालमें ही बुन्देलखण्ड़को मुगल सत्तासे मुक्त कर एक स्वतन्त्र राज्यकी स्थापना की । वे ८१ वर्षकी उम्र तक लड़ाईके मैदानमें बराबर युद्ध करते रहे । वे एक असाधारण शौर्य पुञ्ज योद्धा तथा कुशल सेनापतिके साथ-साथमें एक धार्मिक नेता भी थे । सं. १७८८ पौष वदी तृतीया शुक्रवारके दिन उन्होंने नश्वर शरीरका परित्याग कर दिया ।

(क्रमशः.....)

क्रोधाद भवति सम्मोहः, सम्मोहात्स्मृति विभ्रमः ।
स्मृतिभ्रंशाद् बुद्धिनाशो, बुद्धिनाशात्प्रणश्यति ॥

(गीता २/६३)

क्रोधसे सम्मोह (मूढता) होता है सम्मोहसे स्मृति नष्ट हो जाती है । हम अपने कामको भूल जाते हैं । स्मृति नष्ट होनेसे विचार शक्ति नहीं रहती । विवेक नष्ट होनेपर मनुष्य अपनी स्थितिसे गिर जाता है । इससे बचनेके लिये विचार करो जगतमें कण-कणमें परमात्माकी सत्ता है यह उनकी ही रचना है । मैं क्रोध करूं तो किस पर ? अपने हृदयको विशाल बनाओ अपने दिलमें सभीको स्थान दो सभीसे प्यार करो किसीसे घृणा मत करो । "**वसुधैवकुटुम्बकम्**" की भावना रखो । सब अपने हैं तो क्रोध फिर किसपर करोंगे ?

क्रोध करनेसे स्वयंको ही ज्यादा हानि होती हैं । कई तरह की बीमारी भी होती है । यदि क्रोध आये तो चुप रहना चाहिये । यदि क्रोध हमारे ऊपर हो गया तो सामने वालेका तो कुछ नहीं बिगड़ेगा, हमारा ही पतन हो जायेगा ।

श्री निजानन्द कथामृत

(ब्रह्मलीन पं. श्री कृष्णदत्त शास्त्री विरचित

निजानन्द चरितामृतसे)

श्रीजीकी अरब यात्रा

(गतांक पृष्ठ २६ से क्रमश.....)

दूसरे दिन जब बादशाह दरबारमें आया तो सबसे प्रथम श्रीजीको बुला लानेके लिये चोबदार भेजे। चोबदार इधर उधर दौड़ घुमकर श्रीजीको बुला ले गए और अदालतमें हाजिर किया। बादशाह श्रीजीको देखकर बहुत खुश हुआ एवं पहले भारतवर्षके धर्मोंका रहन सहन और वर्णाश्रम आदिकी तमाम बातें पूछीं।

श्रीजीने यथाक्रम सबका उत्तर दिया और भारतवर्षके देश काल तथा वर्णाश्रम और जाति धर्म आदिका परिचय बताया। जिसे सुनकर बादशाहको बड़ा आनंद प्राप्त हुआ। तदनन्तर आपसे पूछने लगा कि –आपने हमारे मंत्रीको अपनी फरियाद सुनाई है या नहीं ? इस प्रकार बादशाहके पूछते ही मंत्रीके प्राण एकदम सूख गए। समझ गया कि अब मेरे प्राण बचना कठिन है। कारण बादशाहका नियम था कि यदि मंत्री किसी प्रजाकी फरियाद न सुने या सुनकर अमलमें न लावे तो उस(मंत्री)को बादशाह तत्काल मरवा डालता था। इस कारण मारे भयके मंत्री कांपने लगा। परंतु श्रीजीने उसको बचा दिया। कहने लगे, मन्त्रीके पास तो फरियाद नहीं की, पर बाकी सब हाकिमोंके पास कर चुका हूं। तत्पश्चात जितनी भी शिकायतें थीं, श्रीजीने सब कह सुनाई।

बादशाहके दिल पर कुछ ऐसा दैवी प्रभाव पड़ा कि श्रीजीको कोई महान पुरुष समझकर आपकी सब बातें बड़ी गौरसे सुनता रहा और अंतमें सब धन माल बहाल कर दिया। शेखसल्ला हाकिम जिसने श्रीजीका माल जप्त किया था, उसके ऊपर सख्त हुकमनामा लिखा कि तुमने बहुत गैरईंसाफ

किया है। अब तुम अपना भला चाहो तो इनका जो कुछ सुत सामान, रूपया पैसा, द्रव्य दौलत, हो पाई पाई सब दे दो। अगर तुमने मेरा हुकम पाकर भी देनेमें देर की तो तुमको रसातलमें भेज दूंगा। इतना याद रखना। इस प्रकार हुकमनामा[१] देकर एक चोबदार भेज दिया कि तुम इनको सब धन माल सुपुर्द करा देना।

इस प्रकार डीग्री बहालका हुकमनामा पाकर श्रीजी चोबदारके साथ बसरा आये और शेखसल्लाके पास जाकर हुकमनामा हाथमें दिया, एवं चोबदारने अपनी जबानी भी सब हकीकत समझा दी।

बादशाहका हुकमनामा पाते ही शेखसल्लाने सब माल मिल्कत और रूपया पैसा श्रीजीको सुपुर्द कर दिया। तदनंतर आप प्रसन्न हो घर आये और चोबदारको विदा किया। अभी धन मालको संभार कर अच्छी तरह बैठने भी नहीं पाये कि तीसरे दिन बखार(गोदाम) और दुकानमें आग लग गई। जितना माल सामान था, सब भस्म हो गया जो कुछ सोने चांदीकी चीजें थीं, जलकर बच गई, उन्हें समेटकर इकट्ठा कर लिया।

इधर श्री ५ नवतनपुरी धाममें श्री निजानन्द सदगुरुजीने खेताभाईके शरीरत्याग होनेका समाचार और सब हाल सुना तो खेद हुआ। श्रीजीको अकेला समझकर मददके लिये विहारीजी और श्यामजीको भेजा। दोनों जहाज पर सवार होकर अरब देश(बसरा)में जा पहुंचे। विहारीजी और श्यामजीको देखते ही श्रीजीको बड़ी प्रसन्नता हुई। बड़े प्रेमके साथ सब समाचार कहा और घर परिवारकी कुशल क्षेम पूछी। श्रीजी महान आत्मा थे, किसी प्रकारका अन्तर नहीं था, कुल हिसाब किताब रोजनामचा बही खाता पाई पाई करके समझा दिये। जो कुछ द्रव्य दौलत थी, दोनोंको सौंप दी।

१. वस्तुत न्यायकी दृष्टिसे देखें तो शेखसल्ला दंडका पात्र था। उसने बिना पूछे धनमाल जप्त कर लिया था और इन्साफ भी नहीं किया परन्तु मुसलमानी राज्योंमें हिन्दू प्रजा पर ऐसा अन्याय आज भी हो जाया करते हैं तब उस वक्त तो पूछता ही कौन था। यहीं कारण था कि बादशाहने भी सिर्फ रूक्कामें ही डांट फटकार देना काफी समझा और अपने पास न बुलाया। क्या विदेशमें एसियावासियों पर आज कम अन्याय होते हैं ?

अनन्तर अपनी मुसीबत और परिश्रमका सब किस्सा कह सुनाया । परन्तु विहारीजी और श्यामजीको प्रसन्नता न हुई । हृदयमें कलियुगने अपना प्रभाव जमाया । ऊपरसे तो हां हां करते रहे, परन्तु अन्तरात्मामें कपट आ बसा । श्रीजीके कष्ट और परिश्रमकी कदर करना तो अलग रहा, उलटा दोषारोपण करनेका विचार करने लगे ।

दयो जवाहिर और कै वस्त, करी भांति भांति कै जो किस्त ।
सो लै स्याम विहारी आये, बातें झूठी कहत बनाये ॥
श्री देवचन्द्रजीसे कही जु तब, वे मिहिरराज नाहीं अब ।

(सनेहसखी वीतक)

अभी दुकानका बहुत–सा काम समेटना बांकी था । बहुत कुछ द्रव्य इधर उधर व्यापारमें फैला था, जो इकठ्ठा नहीं हो पाया था । अतएव श्रीजी तो इस समय देश न लौट सके, परन्तु श्री विहारीजी और श्यामजी[१]के जो कुछ द्रव्य हाथ लगा सोना चांदी हीरा मोती सब लेकर श्री ५ नवतनपुरी वापस लौट आये । यहां पर दोनोंने सम्मतिकर श्री निजानन्द स्वामीजीसे जाकर कहा कि मिहिरराजजी अब पहले जैसे नहीं रहे, उनका तो सब व्यवहार ही बदल गया । हमें कुछ नहीं दिया, स्वयं सब हजम कर गये, इत्यादि अनेक प्रकारसे मिथ्या बात बताकर उलटा सीधा समझा दिया और सत्य बात छिपा दी ।

यद्यपि श्री निजानंद स्वामीको पूर्ण विश्वास था कि श्री मिहिरराज ऐसा कभी नहीं कर सकते । यह तो इन्हीं लोगोंके दिलपर कलियुग आ बसा है, अतः कुछ कपट करना चाहते हैं । परंतु श्री मिहिरराजजीकी बातें अपने सामने प्रत्यक्ष सुने बिना कुछ कहना उचित न समझा, अतः चुपचाप रह गये ।

इधर विहारीजी और श्यामजीने सोचा कि श्री मिहिरराजजीके आने पर हमारा सब कपट विदित हो जायेगा और पोल खुल जाने पर लज्जित

---

१. स्वरचित वृतान्तमुत्तावलीमें श्री व्रजभूषणजीने श्री विहारीजी और श्यामजीकी इस बसरा(अरब) यात्रामें श्यामजीके छोटे भाई मानजीका जाना भी माना है, परंतु अन्य वीतककार नवरंग स्वामी आदि महात्माओंने इस बात का उल्लेख नहीं किया है ।

होना पड़ेगा अतः कुछ ऐसी युक्ति करनी चाहिये, जिससे श्री निजानंद स्वामी और मिहिरराजजीका मिलाप ही न होने पावे। इस प्रकार निश्चयकर बालबाईके पास जाकर कहने लगे, हे बालबाई ! श्री मिहिरराजने आपके लाखों रुपये दबा लिये। हम इतनी दूर हैरान हुए पर हमें कुछ नहीं दिया और न उनकी किसीको देनेकी इच्छा है। वे तो तुम्हारे भाईका सब धन पचा जाना चाहते हैं। इसलिये तुम सरकारमें पहलेसे ही अर्जी कर दो कि हमारे भाईका धन हमें मिलना चाहिये।

इधर जब श्रीजी सब माल सामान लादकर बसरासे आने लगे तो पहले अपने आनेकी खबर श्री ५ नवतनपुरी धाममें लिख भेजी। बस, खबर पाते ही बालबाईने राजाके दरबारमें जाकर अरजी कर दी कि – हमारे भाईने बसरामें लाखों रूपया कमाया था वे अचानक मर गये। उनका सब धन माल श्री मिहिरराजजीने ले लिया है, हमें कुछ भी नहीं दिया। अब जहाज पर लादकर घरको ला रहे हैं। इसलिये हमारी सरकारसे अरज है कि वह सब माल हमें मिलना चाहिये। कदाच हमें न भी मिले तो सरकारमें जमा हो, पर श्री मिहिरराजका कोई हक नहीं। इस प्रकारकी फरियाद सुनकर राजाने जहाजके मालको जप्त करनेका हुकम दे दिया।

संवत सत्रह सै अठोत्तरे, हुआ ये मजकूर।
सब सामा गई रावरमें, जिनके लिखी अंकूर॥

– लालदासजी वीतक

जैसे ही श्रीजी जहाजको लेकर किनारे पर उतरे राजाके सेवकोनें सब द्रव्य दौलत जप्तकर राज्य दरबारमें ले ली एवं बहीखाताका हिसाब किताब लेनेके लिये श्रीजीको भी डेढ मास तक रोके रखा। प्रथम तो श्रीजीके आदर्श जीवनमें जन्मसे ही स्वार्थको स्थान नहीं था और फिर खेताभाईकी निःश्वार्थ सेवाके लिये सदगुरुने भेजा था। इस वास्ते श्रीजीके हिसाबमें किसी प्रकारका अंतर मिले, यह तो संभव ही नहीं था। तथापि राजाकी आज्ञानुसार खेताभाईके

जमा खर्चका पाई पाई सम्पूर्ण हिसाब समझा देना कर्तव्य था। अतः आप रुक गये और सब प्रकारसे बही खाताको समझा कर घर आये।

यद्यपि श्री निजानंद सदगुरुके हृदयमें श्रीजीके प्रति किसी प्रकारका अंतर नहीं था। और श्रीजीके निर्मल और पवित्र हृदयमें श्री सदगुरुजीके प्रति जो पूज्य भाव और अनन्य प्रेम था, उसमें भी किसी प्रकार अंतर नहीं पडने पाया, दोनों एकात्मा थे। तथापि अपनी निस्वार्थ सेवाके प्रति विहारीजी और बालबाईके असद व्यवहारसे आपके हृदयमें एक प्रकारका खेद प्रकट होने लगा। एकात्मा सुंदरसाथमें अविश्वासका कारण उत्पन्न होनेसे आपके ऊपर लोक लाजका इतना बडा बोझ आ लदा कि सदगुरुके लिये बार बार मन ललचाया करे और हृदयमें भांति भांतिके संकल्प विकल्प उठा करें, परंतु श्री सदगुरुजीके पास जानेकी हिम्मत ही न पडी। इसी उधेडबुनमें दो वर्ष व्यतीत हो गए।

बहुत भांति उर उलसे वहां, गवन आपको होई न तहां ।
होई विरह बहु हिरदे आना, कारज कारन बात निदाना ॥
जेष्ठ भ्रातकी जाया जौन, बोली तहां एक दिन तौन ।
खडग कढी थी जिनके काजा, तिनको भूले सकल समाजा ॥
भयो उदास चित्त तेहि ठामा, इततें गए धरोल ग्रामा ॥

(वृत्तांत मु. ३९)

एक दिवस किसी प्रसंगवश बड़े भाईकी स्त्री कहने लगी, जिनके लिये तलवार निकालकर भाईको मारने दौड़े थे, उनको एकदम भूल गए। आजकल गुरुदेवके दर्शनोंका नाम भी नहीं लेते, यह कैसा प्रेम ? यह सुनकर श्रीजीका चित्त बहुत उदास हो गया। अतः आप यहांसे ध्रोल नामके चले गए।

(क्रमशः.....)

संस्कार

आत्म परमात्माका अंश है । यह अंश प्रत्येक प्राणीमें विद्यमान है । अज्ञानता वश मानव जगह-जगह भटकता रहता है। मनुष्यके अधिकतर कर्मोंका फल इसी जन्ममें मिल जाता है । सत कर्मोंके कारण अच्छे संस्कार मिलते हैं । सत्संगसे मनुष्य काम, क्रोध, लोभ, मोह जैसे शत्रुओंसे विजय प्राप्त करता है । संस्कार ऐसे धार्मिक कृत्य हैं जो व्यक्तिकी आत्मा और शरीरको पवित्र, परिष्कृत और उन्नत बनाते हैं ।

बच्चोंका वैदिक विधिसे संस्कार अवश्य करना चाहिए क्योंकि संस्कारोंके द्वारा निर्मल बनाकर उसे श्रेष्ठ मनुष्य बनानेका प्रयास किया जाता है । आजके युवक कु संस्कारोंमें फँस कर अपना जीवन बर्बाद कर रहे हैं इसलिए हर माता-पिताको अपने बच्चोंमें अच्छे संस्कार डालने चाहिए । हमारी पूजा पद्धतिका मुख्य आधार सेवा ही है, जिसके द्वारा हम परमात्मा की उपासना करते हैं । सेवा परोपकारका प्रतीक भी हैं ।

परमात्माकी प्राप्तिके लिए मानवको धन या वैभवकी आवश्यकता नहीं होती, अगर ऐसा होता तो सभी धन्नासेठ या व्यापारी वर्ग ही प्रभुकी कृपाके पात्र होते व मानवको प्रभुकी प्राप्तिके लिए अथक प्रयास न करने पडते । कोई भी इंसान सर्वप्रथम अपनो कर्मो द्वारा ही संसारमें पहचान बनाता है और प्रभुकी कृपा पानेके लिए ही मानव सत्कर्मका सहारा लेता है । उसका आचरण और उसके द्वारा किये गये सत्कर्म ही प्रभु प्राप्तिके मार्गमें मानवकी सहायता करते हैं । यज्ञको इस संसारका श्रेष्ठ कर्म माना गया है क्योंकि यज्ञ करनेसे न केवल प्रभुकी भक्तिमें सहायता मिलती है बल्कि मानव जातिका कल्याण भी इसमें निहित है । यहाँपर यज्ञका तात्पर्य परार्थ कर्म है ।

परोपकारकी भावना रखने वाला मानव सदा प्रभुकी कृपाका पात्र होता है । कहा गया है कि निःस्वार्थ भावसे किया गया कोई भी कर्म अर्थात् दूसरोके कल्याणके कार्य करते हुए सेवा इत्यादिके माध्यमसे धर्ममार्ग पर चलते हुए प्रभुकी कृपा प्राप्ति हेतु सदैव प्रयासरत रहना चाहिए ।

दृष्टान्त बोध

विनम्र व्यक्ति झुककर दुनियामें कई काम कर सकता है जबकि अकड़की वजहसे नुकसान ही होते हैं

महात्मा गांधीके साथ आनंद स्वामी नामके एक शिष्य रहा करते थे। वे गांधीजीके साथ रहते थे तो खुदको बहुत विशिष्ट यानी खास मानते थे। इस संबंधमें गांधीजीके विचार बहुत अलग थे।

आम और खास व्यक्तिमें फर्क रखनेका सभीका अपना-अपना तरीका होता है। कुछ लोग आम आदमीको कुछ नहीं समझते। आम आदमी यानी जो गरीब है, निरक्षर है, जरूरतमंद है। जो लोग समर्थ होते हैं यानी जिनके पास सामनेवाले व्यक्तिसे ज्यादा धन है, ज्यादा प्रसिद्ध है, कोई बड़ा पद है तो वे खुदको खास समझने लगते हैं।

एक दिन आनंद स्वामी महात्मा गांधीके साथ यात्रा पर थे। इस दौरान एक सामान्य व्यक्तिके साथ आनंद स्वामीकी बहस हो गई। उस व्यक्तिने किसी बातको लेकर कोई टिप्पणी की तो आनंद स्वामीने उसे थप्पड़ मार दिया। वह व्यक्ति बहुत सामान्य था। इस कारण थप्पड़ खानेके बाद एक तरफ खड़ा हो गया। वह आनंद स्वामीसे कुछ बोल भी नहीं सकता था। कुछ देर बाद ये बात गांधीजी तक पहुंची।

गांधीजी चाहते तो इस बातको नजर अंदाज करके आगे बढ़ सकते थे, लेकिन उन्होंने आनंद स्वामीसे पूछा, 'क्या तुमने उस व्यक्तिको थप्पड़ मार दिया?'

आनंद स्वामीने जवाब दिया, 'हां, उस समयमें गुस्सेमें था और मेरा हाथ उस पर उठ गया।'

गांधीजी बोले, 'ठीक है, उस समय तुम गुस्सेमें थे, लेकिन अब तो तुम्हारा गुस्सा शांत हो गया है, जाओ और उससे माफी मांगो।'

आनंद स्वामीको ये बात ठीक नहीं लगी कि एक सामान्य व्यक्तिसे माफी मांगनी होगी, लेकिन गांधीजीका आदेश था तो आनंदने उस व्यक्तिसे माफी मांग ली।

बादमें गांधीजीने उनसे पूछा, 'अब कैसा लग रहा है ?'

आनंद स्वामी बोले, 'हल्का लग रहा है। मैंने जो किया वह ठीक नहीं था, लेकिन माफी मांगनेके बाद थोड़ा अच्छा लग रहा है।'

गांधीजीने उससे कहा, 'कभी भी ये मत सोचना कि तुम खास हो और दूसरा आम है। परमात्माके लिए सभी मनुष्य समान हैं। आम और खास तो हम बनाते हैं, लेकिन फिर भी शिक्षा, पद, प्रतिष्ठा और मेरे साथ रहनेके कारण तुम विशिष्ट हो गए तो कभी ये मत सोचना कि दूसरे लोग सामान्य हैं। आत्माका सम्मान सभीके लिए बराबर है।'

सीख –समाजमें आम और खास इंसानोंमें फर्क किया जाता है। इसी फर्ककी वजहसे अपराध भी बढ़ते हैं। जिनको तिरस्कृत किया जाता है, वे अपराधी हो जाते हैं। परमात्मा इंसानोंमें भेदभाव नहीं करते हैं। इसीलिए सभीका सम्मान करना चाहिए।

विनम्रतासे बड़ी-बड़ी परेशानियां दूर की जा सकती हैं, अकड़से नुकसान ही होता है।

(साभार - दैनिक भाष्कर)

आवास व्यवस्था

सुन्दरसाथजी, श्री ५ नवतनपुरी धाममें आप सभीके लिए आवास एवं भोजनकी सुन्दर व्यवस्था है। इसको और व्यवस्थित करनेका प्रयत्न किया जा रहा है। इसके लिए आप सभीका सहयोग अति आवश्यक है। यदि आप अपने आगमनकी सूचना पहलेसे ही देंगे तो व्यवस्थामें सरलता रहेनेके साथ-साथ आप सभीकी यथोचित व्यवस्था भी होगी।

संपर्क : आवास व्यवस्था, 09714009606, 08511226600

श्री ५ नवतनपुरी धाममें गत जनवरीसे मई २०२१ तक दान भेटकी सेवा करनेवाले सुन्दरसाथ ।

₹ १८०००/– उमा अग्रवाल – **हैदराबाद** ।
₹ १५०००/– ऐश्वर्या अग्रवाल – **हैदराबाद** ।
₹ १८०००/– सुजीत अग्रवाल – **हैदराबाद** ।
₹ १८०००/– आर्यन अग्रवाल – **हैदराबाद** ।
₹ १८०००/– हेमी अग्रवाल – **हैदराबाद** ।
₹ १५१००/– कृष्णप्रसाद खतीवडा ।
₹ १४०००/– शत्रुघ्न अग्रवाल – **हैदराबाद** ।
₹ ११०००/– श्री अशोक के. आर. गोहेल – **दार्जिलींग** ।
₹ ११०००/– श्री कृष्ण रामचन्द्र अग्रवाल – **पूना (महाराष्ट्र)** ।
₹ ११०००/– श्री ब्रिजेश प्रणामी – **मुम्बई** ।
₹ ५०००/– असीम मदन खुराना
₹ २६००/– हरकिशनलाल आहुजा – **दिल्ली** ।
₹ २१००/– परमधामवासी श्री बलवीरसिंह कौशिकजी– **चंडीगढ़** ।
₹ १५००/– गेडीलाल साल्वे (जी. एल. साल्वे) एवं वीणा साल्वे – **जेताना (उदयपुर)** ।

दानभेटमें सेवा ₹ ११००/ प्रदान करनेवाले सुन्दरसाथजी

१) जी.एल. तनेजा – **दिल्ली** । २) बाबा रामहरी उपाध्याय – **हरिद्वार** । ३) गिरधरलाल – **गोवटी ।** ४) प्रेमिला सिंगल – **दिल्ली** । ५) आत्माराम अग्रवाल – **दार्जिलिंग** ।

रसोईके लिए सेवा प्रदान करनेवाले सुन्दरसाथजी

१) जीत इन्द्र शर्मा – **शुकलाई (आसाम)** ।
२) परमधामवासी मातृश्री मधु राणा – **काठमाडौं (नेपाल)** ।
हस्ते **:** सौभाग्यवती पुत्री राधा मल्ल एवं श्री चेतनमणि महाराज ।
३) परमधामवासी कमलादेवी मुरलीधर भण्डारी – **मुम्बई** । हस्ते **:** इन्दिरा भण्डारी ।
४) धामवासी ब्रिजपालसिंह राणा – **घरौंडा** । हस्ते – उषा राणा ।
५) अमन एवं स्वाति सिंगल – **दिल्ली** । हस्ते **:** विरेन्द्रकुमार सिंगल ।
६) जानुका देवी दहाल – **काठमाडौं (नेपाल)** ।

७) जस्मीन मित्तल – **अहमदाबाद** हस्ते **:** दीपक मित्तल ।
८) देवाशिष पियुषभाई जोबनपुत्रा – **सिकन्दरबाद** ।
९) परमधामवासी जयसुखलाल एम. ठक्कर – **हैदरबाद** ।
१०) पियुष शान्तिलाल जोबनपुत्रा – **सिकन्दरबाद** ।
११) नाथाजी प्रेमजी पटेल – **बड़ी विरवा (राज.)** ।
१२) रामशंकर चौबीसा – **करवा (राज.) ।**
१३) लीलारामजी चौबीसा – **बड़ी विरवा (राज.)** ।
१४) परमधामवासी रामा हिराजी साल्वे – **उदयपुर (राज.)** । हस्ते **:** कुरीबाई साल्वे ।
१५) परमधामवासी दयावंती राणा – **गोरखपुर** । हस्ते **:** विकास राणा ।
१६) श्री रामशंकर चौबीसा – **बड़ी विरवा** । हस्ते हीरालाल चौबीसा ।
१७) नीलकंठ मोतीराम चौबीसा – **बड़ी विरवा (राजस्थान)** ।
१८) मांगीलाल गौतमलाल लोहार – **प्रतापगढ़ (राजस्थान)** ।

श्री राजभोगके लिए सेवा ₹ ११००/ प्रदान करनेवाले सुन्दरसाथजी

१) परमधामवासी विष्णु पी. ज्ञवाली – **बुटवल (नेपाल)** । २) जगदीशभाई साल्वे – **जैताना (राज.)** । हस्ते – जी.एल. साल्वे । ३) विन्यास उदय ठाकर – **जयपुर** । अमन एवं स्वाति सिंगल – **दिल्ली** । ४) गेडीलाल साल्वे (जी. एल. साल्वे) एवं वीणा साल्वे – **जेताना (उदयपुर)** । ५) प्रनुज भगत – **जयपुर** ।

गोटा पारायणके लिए सेवा ₹ २५००/ प्रदान करनेवाले सुन्दरसाथजी

१) वरूण – **हैदराबाद** । राधिका – **हैदराबाद** । २) जगदीशभाई साल्व – **जैताना (राजस्थान)** । हस्ते – जी.एल. साल्व । ३) अमन एवं स्वाति सिंगल – **दिल्ली** । हस्ते **:** विरेन्द्रकुमार सिंगल । ४) दीपक कक्कड – **मालावी (दक्षिण आफ्रिका)** । ५) स्वेता दीपक कक्कड – **मालावी (दक्षिण आफ्रिका)** । ६) श्री प्रतिक अग्रवालजी – **अहमदाबाद** । ७) संजय अग्रवाल एवं ममता अग्रवाल – **मुम्बई** । ८) राजवी तुषार मित्तल – **अहमदाबाद** । ९) गेडीलाल साल्वे (जी. एल. साल्वे) एवं वीणा साल्वे – **जैताना (राजस्थान)** ।

अल्पहारकी लिए सेवा प्रदान करनेवाले सुन्दरसाथजी

१) रामेश्वर परमार – **इन्दौर ।** जसमिन मित्तल – **अहमदाबाद** । २) अमन एवं स्वाति सिंगल – **दिल्ली** । हस्ते **:** विरेन्द्रकुमार सिंगल । ३) श्रीमती गीता चावडा – **(करनाल)** ।

साप्ताहिक पारायणके लिए सेवा ₹ २१००/ देनेवाले सुन्दरसाथजी

१) जुगल किशोर परनामी – **जयपुर** । २) परमधामवासी विष्णु पी. ज्ञवाली – **बुटवल (नेपाल)** । ३) सारदसिंह हिमानसिंह – **भोपाल** । ४) राजकुमार भंडेरी – **हैदराबाद** । ५) जयेश गुप्ता– **अहमदाबाद** । ६) इन्द्रिरा अधिकारी – **मंगलधाम (कालिमपोंग)** । हस्ते **:** श्री १०८ मोहनप्रियाचार्य महाराज । ७) परमधामवासी जयसुखलाल एम. ठक्कर – हैदरबाद ।

ध्वजारोहणके लिए सेवा ₹ ५१००/ देनेवाले सुन्दरसाथजी

अमन एवं स्वाति सिंगल – **दिल्ली** । हस्ते **:** विरेन्द्रकुमार सिंगल ।

अखण्ड पारायणके लिए सेवा ₹ ५१००/ देनेवाले सुन्दरसाथजी

०१) सुजीत अग्रवाल – **हैदराबाद** । ०२) जागृत गोयल – **हैदराबाद** ।

कोठार (भण्डार) के लिए सेवा देनेवाले सुन्दरसाथजी

₹ २६००/ जगन छाबरा – **दिल्ली ।**

गोदान अर्थात् ₹ १५,०००/ की सेवा करनेवाले सुन्दरसाथजी

१) पुजारी श्री मोहनप्रसाद शर्मा – **मेडी मन्दिर (जामनगर)** ।

२) शशिबेन मित्तल – **अहमदाबाद** ।

उपर्युक्त सभी सेवाओमें योगदान प्रदान करने वाले सभी सुन्दरसाथको श्री कृष्ण प्रणामी धर्मके आचार्यपीठ श्री ५ नवतनपुरी धामके शुभाशीर्वाद । आप सभीकी मनोकामनायें श्री राजजी महाराज पूर्ण करें । आपकी आध्यात्मिक और भौतिक दोनों संपदाकी अभिवृद्धि हो ऐसी शुभकामना सह प्रणाम ।

साहित्य सेवा

बड़ी विरवा (राजस्थान) : निवासी लीलाराम चौबीसाजीने दिनांक २५/०५/२०२१ को श्री ५ नवतनपुरी धाममें एक दिनकी रसोई, गौशालाके लिए सेवा, गोटा पारायण तथा श्री राजभोग आदिकी सेवा करके श्री कृष्ण प्रणामी धर्म पत्रिकाकी साहित्य सेवामें ₹ ११००/– प्राप्त हुए हैं ।

श्री राजजी महाराज सभी सपरिवारकी मनोकामनायें पूर्ण करें इन्हीं शुभकामनाओंके साथ श्री ५ नवतनपुरी धाम एवं परम पूज्य आचार्य महाराजश्रीके शुभाशिष ।

परमधाम गमन

आसाम रांसाली निवासी पुजारी श्री पुष्प घिमिरेके पिताजी श्री उत्तमदास घिमिरेका दिनांक २५/०४/२०२१ को परमधाम गमन हो गया। पिताजीके धामगमनके पन्द्रह दिनके बाद दिनांक १०/०५/२०२१ को माताजी श्रीमती लीलावती घिमिरेजीका भी परमधाम गमन हो गया। वर्तमान वे दोनों श्री कृष्ण प्रणामी मन्दिर, राजेन्द्रनगर(मोडासा)में थे। वे अपने परिवारमें चार पुत्रों – पुष्प, केशव, कृष्ण एवं तिलक और एक पुत्री कमलाको छोड़कर गए हैं। गतात्माकी शान्तिके लिए परिवारकी ओरसे श्री कृष्ण प्रणामी धर्म पत्रिकाकी साहित्य सेवामें ₹ १००२/– प्राप्त हुई है।

शुकलाई (आसाम) : निवासी श्री कर्ण धमालाकी धर्मपत्नी श्रीमती डम्बरकुमारी धमालाका ८ मई २०२१ शनिवार रात्रि १.३० बजे वैशाख कृष्ण पक्ष द्वादशी तिथिको ६३ वर्षकी आयुमें धामगमन हो गया है। वे सेवाभावी धर्मनिष्ठ एवं संत गुरुजनोंके प्रति अपार श्रद्धा एवं निष्ठावान थी। श्री राजजीके साथ उनका अगाध प्रेम था। उनकी आत्माशान्तिके लिए श्री कृष्ण प्रणामी धर्म पत्रिकाकी साहित्य सेवामें ₹ ५११/– प्राप्त हुई है।

शुकलाई (आसाम) : अत्रिघाट मंगलबस्ती निवासी श्री झुमर सापकोटाजीकी माताजी श्री मन्दोदरी सापकोटाका दिनांक १२/०२/२०२१ शुक्रवार दोपहर ३.३० बजे (माघ शुक्ल पक्ष प्रतिपदा तिथिमें) परमधाम गमन हो गया है। वे ८० सालकी थी। वे एक सच्ची सुन्दरसाथ अति धर्मनिष्ठ गुरुभक्त सेवाभावी धर्म मन्दिर तथा समाजके प्रति आस्थावान सहज सरल स्वभावकी थी। उनकी आत्माशान्तिके लिए श्री कृष्ण प्रणामी धर्म पत्रिकाकी साहित्य सेवामें ₹ ५००/– प्राप्त हुई है। **प्रेषक : डॉ. सेवन छेत्री**

पत्रिका परिवारकी ओरसे श्री राजश्यामाजीसे प्रार्थना करते है कि उपरोक्त सभी गतात्माओंको अपने चरणोंमें सदैव स्थान प्रदान करें एवं इस दारुण दुःख सहन करनेकी क्षमता समग्र परिवारके लोगोंको प्रदान करें। आप सभीको श्री ५ नवतनपुरी धाम एवं परम पूज्य आचार्य महाराजश्रीके आशीर्वाद मिलते रहे।

सूचना : श्री कृष्ण प्रणामी धर्म पत्रिकाके सम्पूर्ण सदस्य एवं पाठकोंको सूचित किया जाता है कि जिनका वार्षिक शुल्क पूर्ण हो गया और "Renew" से शुरु हो गया है तो कृपया पत्रिका पुनः प्राप्त करनेके लिए ग्राहक (PGY, PGL, PHY, PHL, PFL) नम्बरके साथ आप पत्रिका कार्यालय, श्री ५ नवतनपुरी धाममें मनीऑडर भेज दें। पत्रिकाकी अधिक जानकारीके लिए सम्पर्क करें।

कार्यालय : 0288-2670829 ws- 08511226600

श्री ५ नवतनपुरी धामकी-विविध सेवा

- **पारायण** -

१. एक दिवसीय (गोटा)	₹ २५००/-
२. त्रि-दिवसीय (अखण्ड)	₹ ५१००/-
३. सात दिवसीय (साप्ताहिक)	₹ २१००/-
४. महेर सागरके १०८ पाठ	₹ ११००/-
५. विरहके ६ प्रकरणोंके १०८ पाठ	₹ ५५१/-

- **श्री राजश्यामाजीके लिए भोग-आरतीकी सेवा** -

१. श्री राजश्यामाजीके लिए राजभोग (दैनिक)	₹ ११००/-
२. श्री राजश्यामाजीके बालभोग (दैनिक)	₹ ५००/-
३. प्रतिवर्ष जन्म तिथि / पुण्यतिथि पर आरतीके लिए	₹ ११०००/-
४. श्री राजश्यामाजीके लिए अखण्ड दीपककी सेवा	₹ ११००/-
५. पाँच आरतीके लिए घीकी सेवा (मासिक)	₹ १५००/-
६. मानताके लिए प्रार्थना सेवा (एक दिन)	₹ ५००/-

- **रसोई (भोजन-भण्डारा) तथा अल्पाहार सेवा** -

१. पक्की रसोई एवं विशेष अल्पाहार-वस्तु, प्रकार तथा मात्रा अनुरूप खर्च होगा।

२. सुनिश्चित पक्की रसोई(मेवा मिष्टान्न सहित)	₹ ११०००/-
३. सुनिश्चित सादी रसोई (मेवा मिष्टान्न बिना)	₹ ५१००/-
४. अल्पाहार तथा जलपान (सामान्य)	₹ २१००/-

- **श्री कृष्ण प्रणामी औषधालय** -

१. मेडिकल केम्प(एक कैम्प)	₹ ११,०००/-
२. औषधालयकी सेवा (प्रति दिन)	₹ ११,००/-
३. साधु, सन्त तथा विद्यार्थी सहाय कोष न्यूनतम	₹ ११,००/-
४. मंदिरके शिखर पर ध्वजा चढानेकी सेवा	₹ ५१००/-

- **श्री कृष्ण प्रणामी धर्म पत्रिका –**

१. पत्रिकाके एक अंकके प्रकाशनकी सेवा	₹ ३०,०००/–
२. सदस्यता शुल्क १५ वर्षीय	₹ १५००/–
३. सदस्यता शुल्क वार्षिक	₹ १५०/–

गाय दान सेवा –

१. गौशालाका एक दिनका पूरा खर्च	₹ ११,०००/–
२. दूध देनेवाली गाय (एक)	₹ १५,०००/–
३. छोटी बछडी (एक)	₹ ७, ५००/–

श्री ५ नवतनपुरी धाममें आप कोई भी सेवा करना चाहें तो ऊपर दिए गए बैंक खातेमें सेवा राशि जमा कर सकते हैं ।

श्री ५ नवतनपुरी धाममें सेवा भेजनेके लिए बैंक खाताका विवरण इस प्रकार है ।

श्री ५ नवतनपुरी धाम खीजडा मन्दिर ट्रस्ट

: DONATION GIVEN FROM INDIA :

(1)

SHRI 5 NAVTANPURI DHAM KHIJDA MANDIR TRUST
BANK OF BARODA A/c NO: 03680100017612
IFSC : BARB0DIGVIJ
DIGVIJAY PLOT - JAMNAGAR - 361005

(2)

SHRI 5 NAVTANPURI DHAM KHIJDA MANDIR TRUST
HDFC BANK A/c NO: 50100010195952
IFSC : HDFC0000569
GROUND FLOOR, YOGESHWER, OSWAL COLONY - 2
RANJITNAGA R- JAMNGAR - 361005

(3)

SHRI PANCH NAVTANPURI DHAM KHIJDA MANDIR TRUST

ICICI BANK A/c NO: 348601000410
IFSC: ICIC0003486 HIRJI MISTRI ROAD BRANCH,
GRAOUND FLOOR,SHOP 02,OPP:PRANAMI SCHOOL,
HIRJI MISTRI ROAD, JAMNAGAR - 361004

(Note : Trust has received provisional Approval no : AAATP1930CE20214 Under Section 80G(5) of the Income tax act 1961 and certificate issued by Principal Commissioner of Income Tax For the Period 1/4/2021 to 31/3/2026 Trust Reg. no Is A/191/ Jamnagar and its PAN AAATP1930C)

For out of India Donors (FCRA)

NAME : "SHRI PANCH NAVTANPURI DHAM KHIJDA MANDIR TRUST"
ACCOUNT NO. : 40124673911
BRANCH CODE : 00691, IFSC : SBIN0000691
SWIFT : SBININB B104, ADDRESS : FCRA CELL,
4TH FLOOR, SBI, NEW, DELHI MAIN BRANCH
11 SANSAD MARG, NEW DELHI – 110001

श्री कृष्ण प्रणामी गौशाला ट्रस्ट

"Shri 5 Navtanpuri Dham Gaushala Trust"
Yes Bank Ltd A/c No: 053394600001210
IFSC : YESB0000533, Park colony, near Jogger's Park-Jamnagar

प्रणामी धर्म पत्रिका

NAME : "**Pranami Dharma Patrika"**
Bank : Bank Of India, Account No. : **325010100026614**
IFSC: BKID0003250, Branch : Ranjit Road, City : Jamnagar

श्री ५ नवतनपुरी धाम संचालित प्रणामी ग्लोबल स्कूलमें कोरोना टीकाकरणका दूसरा कार्यक्रम संपन ।

हार्दिक श्रद्धाञ्जलि

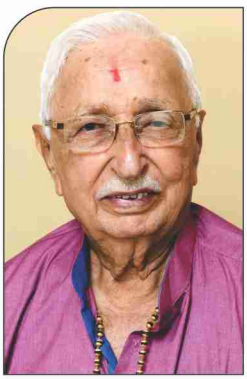

भूज (कच्छ) निवासी धर्मनिष्ठ सुंदरसाथ श्री भगवानभाई तुलसीदास अनमका दिनांक १७/०५/२०२१ को धामगमन हुआ है । वे श्री ५ नवतनपुरी धामकी सेवमें सदैव तत्पर रहते थे । उनके स्मरणमें उनकी सुपुत्रियोंसे पत्रिकके इस अंकके प्रकाशनमें आंशिक सौजन्य प्राप्त हुआ है । पूर्णब्रम्ह परमात्मा अक्षरातीत श्री कृष्णजी धामधनी श्री राजजी उनकी आत्मको अपने श्री चरणोंमें स्थान दें ऐसी प्रार्थना । समग्र परिवारको श्री ५ नवतनपुरी धाम तथा परम पूज्य आचार्य महाराजश्री के आशीर्वाद ।

श्री ५ नवतनपुरी धाममें पारायण एवं भोजन व्यवस्थाके दृश्य ।

उद्घाटन समारोह, चरोतर गैस स्टेसन, आनन्द ।